स्नातक द्वितीय वर्ष (हिंदी प्रतिष्ठा):-

वाणी-सुमित्रा नंदन पंत :-डॉ०मनोज कुमार सिंह,एसोसिएट प्राध्यापक, राजा सिंह महाविद्यालय सिवान।

तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार,

वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।

भव कर्म आज युग की स्थितियों से है पीड़ित,

जग का रूपांतर भी जनैक्य पर अवलंबित,

तुम रूप कर्म से मुक्त, शब्द के पंख मार,

कर सको सुदूर मनोनभ में जन के विहार,

वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।

चित शून्य,--आज जग, नव निनाद से हो गुंजित,

मन जड़,--उसमें नव स्थितियों के गुण हों जागृत,

तुम जड़ चेतन की सीमाओं के आर पार

झंकृत भविष्य का सत्य कर सको स्वराकार,

वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।

युग कर्म शब्द, युग रूप शब्द, युग सत्य शब्द,

शब्दित कर भावी के सहस्र शत मूक अब्द,

ज्योतित कर जन मन के जीवन का अंधकार,

तुम खोल सको मानव उर के निःशब्द द्वार,

वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।

भावार्थ :-

प्रस्तुत कविता छायावाद के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है । इस कविता के माध्यम से कवि ने कविता में अलंकार की अनिवार्यता पर प्रश्न खड़ा किया है । सामान्यतः अलंकार विहीन भाषा अर्थात सीधे और सहज भाषा में कविता की रचना संभव नहीं मानी जाती थी । लेकिन कवि ने इस कविता के माध्यम से कविता में अलंकार को साध्य नहीं साधन के रूप में स्वीकार करने की वकालत की है। कविता प्रश्न शैली में लिखी गई है। कवि अपनी वाणी से काल्पनिक संवाद के माध्यम से काव्य की नई परिभाषा प्रस्तुत करने की कोशिश की है ।

कवि कविता का प्रारंभ प्रश्न से करते हुए कहता है कि क्या मनुष्यों के विचारों को जागृत करने और उनके हृदय में स्वतंत्रता की चेतना के प्रसार हेतु अलंकार युक्त वाणी अनिवार्य है ? दूसरे शब्दों में कवि स्थापित करना चाहता है कि सीधे सहज सरल और अलंकार विहीन वाणी से भी इन सब लक्ष्यों को संभव बनाया जा सकता है ।

आगे कवि कहता है कि क्या वर्तमान युग में पीड़ित शोषित और वंचितों के बीच एकता स्थापित हेतु अलंकार युक्त साज सज्जा वाली भाषा की अनिवार्यता है ?कवि की स्थापना है कि इतना सब कुछ सीधे सहज और सरल भाषा के माध्यम से और आसानी से किया जा सकता है ।

आगे कवि वाणी से प्रश्न करता है कि क्या इस संसार के अधिसंख्य मनुष्यों के हृदय पर छाई निराशा को दूर कर नई ऊर्जा और परिवर्तन की चेतना उत्पन्न करने के लिए अलंकार युक्त वाणी हमारी विवशता है ? क्या हमारी वाणी सीधे-सादे, सरल और सहज शब्दों के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएगी ?प्रकारांतर से कवि का कहना है कि सहज और अलंकार विहीन भाषा से भी इस आदर्श को प्राप्त किया जा सकता है ।

कवि का कहना है कि शब्दों में अनंत और असीमित शक्ति होती है । कर्म , रूप और सत्य की अभिव्यक्ति शब्दों से ही संभव है । इन शब्दों के माध्यम से शोषित, वंचित और हाशिए पर रहे मनुष्यों की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त कर जन मन में छाए अंधकार को दूर किया जा सकता है । नई उर्जा से उनके हृदय को संपन्न किया जा सकता है । इतना सब करने के लिए हमारी वाणी को अलंकार नहीं चाहिए । इतना सब कुछ वह सीधे- सादे, सरल और सहज शब्दों के माध्यम से भी आसानी से कर सकती है । इस कविता के माध्यम से कवि अपनी वाणी से प्रश्न की शैली में पूछते हुए यह स्थापित करने की कोशिश की है कि अभिव्यक्ति को अलंकरण की अनिवार्यता नहीं है । अभिव्यक्ति जितनी ही सरल और सहज होगी उतनी ही उसकी पहुंच दूर तक होगी ।